Culture on the development of Social Behaviour

Ques: सामाजिक मनोविज्ञान की परम्परा में सामाजिक व्यवहार के विकास में संस्कृति की भूमिका की व्याख्या करें।

Ans: भिन्न-भिन्न विद्वानों ने संस्कृति की परिभाषा भिन्न-भिन्न रूपों में दी है-

लिंटन के अनुसार संस्कृति का अर्थ अर्जित व्यवहारों तथा ऐसे परिणामों की समाकृति है, जिसके घटक तत्वों का संचारण तथा साझेदारी समाज विशेष के सदस्यों द्वारा होता है।

मॉर्गन तथा किंग के अनुसार - संस्कृति का तात्पर्य प्रथाओं, आदतों, परम्पराओं तथा कौशलों से है, जिससे किसी व्यक्ति या सामाजिक समूह की विशेषताओं का बोध होता है।

चैपलिन (Chaplin) ने संस्कृति की परिभाषा देते हुए कहा है कि एक समाज को दूसरे समाज से भिन्न करने वाले रिवाजों, कला, विज्ञान तथा धार्मिक एवं राजनैतिक व्यवहारों के सम्मिलित समुच्चय को संस्कृति कहते हैं।

इसी प्रकार लिण्डग्रेन (Lindgren) ने कहा है कि - संस्कृति का तात्पर्य मूल्यों, विश्वासों, मानदण्डों, कौशलों तथा प्रविधियों के तंत्र से है, जो एक समाज द्वारा विकसित होते हैं तथा उनके सदस्यों द्वारा इस्तेमाल किए जाते हैं।

रोजेनबर्ग तथा टरनर (Rosenberg & Turner) के अनुसार संस्कृति ऐसे संज्ञानात्मक तथा मूल्यांकनात्मक विश्वासों - क्या है या क्या होना चाहिए से संबंधित विश्वासों का एक सेट है, जिसे समाज के सदस्य

मान लेते हैं और नये सदस्यों तक प्रसारित करते हैं।

प्रस्तुत परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट है कि संस्कृति का तात्पर्य सभी भौतिक-अभौतिक वस्तुओं से है, जो मानव समाज में उपलब्ध हैं। कला, प्रथा, विश्वास, विज्ञान तथा विभिन्न प्रकार के उपकरण की गणना संस्कृति के अंतर्गत की जाती है। दूसरे शब्दों में जीवन यापन के लिए जो आयाम समाज में विकसित होते हैं, तथा इसके सदस्यों द्वारा व्यवहार किये जाते हैं, उनके समुच्चय (Totality) को संस्कृति कहते हैं।

संस्कृति की सामान्य विशेषताएं (General Characteristics of Culture)

संस्कृति एक ऐसी चीज है जो एक समाज को दूसरे समाज से भिन्न बना देती है। अतः विविध संस्कृतियों में अंतर होना स्वाभाविक है। फिर भी कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो सभी संस्कृतियों में पाये जाते हैं:—

(1) पारिवारिक संगठन (Family Organization):—

प्रत्येक संस्कृति में पारिवारिक संगठन पाया जाता है। इस संगठन में माता-पिता, बच्चे तथा अन्य सदस्य होते हैं। इस पारिवारिक संगठन का आकार बड़ा या छोटा हो सकता है। इसे एकाकी परिवार या संयुक्त परिवार के रूप में देखा जा सकता है।

(2) सामाजिक समूह का निर्माण (Formation of Social group)
प्रत्येक संस्कृति में सामाजिक समूह का निर्माण होता है। एक तो प्राथमिक समूह होता है जिसे परिवार कहते हैं इसके अलावा कई द्वितीयक समूहों का निर्माण होता है। अतः व्यक्ति प्राथमिक समूह के साथ-साथ कई द्वितीयक समूह का सदस्य होता है।

(3) वर्ग का निर्माण (Formation of class) :→ सभी संस्कृतियों में कुछ निश्चित वर्ग होते हैं। समाज कई वर्गों में विभाजित होता है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर लगभग सभी संस्कृतियों में तीन तरह के वर्ग पाये जाते हैं — निम्न वर्ग, मध्यवर्ग तथा उच्चवर्ग।

(4) निश्चित व्यवसाय (Definite Occupation) :→
प्रत्येक संस्कृति के लोग कुछ निश्चित व्यवसाय करके अपनी जीविका चलाते हैं। इसका स्वरूप भिन्न संस्कृतियों में भिन्न होता है। भारतीय संस्कृति में विविध जातियों (castes) के लिए निश्चित व्यवसाय का उल्लेख मिलता है। किन्तु वर्तमान युग में व्यवसाय की कठोरता घटती जा रही है।

(5) जाति व्यवस्था (Caste system) :→ संसार की अधिकांश संस्कृतियों में जाति व्यवस्था पाई जाती है। भारत में यह व्यवस्था काफी जटिल तथा कठोर है। लगातार सामाजिक परिवर्तन होने पर भी यह व्यवस्था कायम भी जाती है। जापान, अमेरिका आदि देशों में भी जाति व्यवस्था पाई जाती है। मुस्लिम संस्कृति में भी जाति व्यवस्था है।

(6) मूल्य विश्वास तथा परम्पराएं (Values beliefs and traditions) → प्रत्येक संस्कृति के कुछ विशिष्ट मूल्य, विश्वास तथा परम्पराएं होते हैं, जिनका संचालन या प्रसारण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक होता है। इसे सांस्कृतिक रीति-रिवाज कहते हैं। फलतः संस्कृतियों में टकराव होता है। भारत में मुस्लिम संस्कृति तथा हिन्दू संस्कृति के मूल्यों विश्वासों तथा परम्पराओं में विरोध होने के कारण साम्प्रदायिक दंगों की प्रवृत्ति हमेशा बनी रहती है।

(7) निश्चित नियम तथा अधिनियम (Definite rules and regulations) :→ संस्कृतियों में कुछ निश्चित नियम तथा अधिनियम होते हैं जिनके आलोक में किसी संस्कृति के बच्चों का समाजीकरण एक विशेष ढंग से होता है। इन्हीं नियमों के आधार पर किसी समाज के सदस्य अनुशासित रहते हैं तथा सामाजिक जीवन जीने में सफल होते हैं। स्मरण रखना चाहिए कि एक संस्कृति में जिस चीज की अनुमति है, दूसरी संस्कृति में वर्जित हो सकती है। भारतीय संस्कृति में समलैंगिकता (Homosexuality) एक अपराध है, जबकि कुछ पाश्चात्य संस्कृतियों में यह एक सामाजिक व्यवहार है। मुस्लिम संस्कृति में भाई-बहन के बीच विवाह एक सामान्य व्यवहार है, जबकि हिन्दू संस्कृति में यह असामान्य व्यवहार है।

(8) निश्चित जीवन लक्ष्य (Definite life goal) :→ प्रत्येक संस्कृति के लोगों का एक निश्चित जीवन लक्ष्य होता है। यह लक्ष्य या उद्देश्य प्रत्यक्ष होता है तथा अप्रत्यक्ष भी।

(9) मनोवैज्ञानिक एकता (Psychological Unity) :→ संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता मनोवैज्ञानिक एकता अथवा कार्यात्मक एकता है। किसी संस्कृति को कायम रखने, विकसित करने तथा विशिष्टता प्रदान करने में यह मनोवैज्ञानिक एकता मौलिक शक्ति का काम करती है। डूब (Doob) के अनुसार इसी कार्यात्मक एकता के कारण किसी संस्कृति के सदस्यों में एकरूपता पाई जाती है।